International Journal of Home Science 2020; 6(1): 151-152

International Journal of Home Science

ISSN: 2395-7476
IJHS 2020; 6(1): 151-152
© 2020 IJHS
www.homesciencejournal.com
Received: 10-11-2019
Accepted: 14-12-2019

डॉ0 सरिता वर्मा
विभागाध्यक्ष, गृह विज्ञान महिला महाविद्यालय पोस्ट ग्रेजुएट कालेज, कानपुर, उत्तर प्रदेश, भारत।

जया शुक्ला
विभागाध्यक्ष, गृह विज्ञान महिला महाविद्यालय पोस्ट ग्रेजुएट कालेज, कानपुर, उत्तर प्रदेश, भारत।

Corresponding Author:
डॉ0 सरिता वर्मा
विभागाध्यक्ष, गृह विज्ञान महिला महाविद्यालय पोस्ट ग्रेजुएट कालेज, कानपुर, उत्तर प्रदेश, भारत।

किशोर एवं किशोरियों के सम्पूर्ण विकास पर पड़ने वाले संचार माध्यमों के प्रभाव

डॉ0 सरिता वर्मा एवं जया शुक्ला

प्रस्तावना

किशोरावस्थाः– किशोरावस्था के सम्बन्ध में यह परम्परागत विश्वास रहा है कि किशोरावस्था विकास की एक क्रान्तिक (Critical) अवस्था है। इस अवस्था के किशोर को न किशोर कह सकते हैं और न प्रौढ़ व्यक्ति ही कह सकते हैं। इस अवस्था में किशोर के शारीरिक और मनोवैज्ञानिक गुणों में परिवर्तन प्रौढ़ावस्था की दिशा में होते हैं। शब्द Adolescence शब्द के यदि शाब्दिक अर्थ को देखा जाय तो यह स्पष्ट होता है कि Adolescence शब्द की उत्पत्ति लैटिन भाषा के शब्द Adolescere से हुई है, जिसका अर्थ है–परिपक्वता की ओर बढ़ना (To grow or to grow to maturity)

किशोरावस्था में विकास के प्रतिमान

1. किशोरावस्था में शारीरिक विकास
2. किशोरावस्था में क्रियात्मक विकास
3. किशोरावस्था में सवेंगात्मक विकास
4. किशोरावस्था में भाषा के विकास
5. किशोरावस्था में सामाजिक विकास
6. किशोरावस्था में व्यक्ति विकास

संचार

''संचार प्रसार का एक अनिवार्य अंग है। प्रसार एक शैक्षणिक प्रक्रिया है जिसमें उपयोगी ज्ञान को लोगों तक सचांलित किया जाता है। आदिकाल में नव विविध मुद्राओं के माध्यम से कई भावों को अभिव्यक्त करता आया हैं।

खजुराहों की मूर्तियाँ इनका ज्वलंत उदाहरण है। संचार मानव समुदाय की जीवन की वह धुरी है। जिसके द्वारा मनुष्य के सामाजिक सम्बन्धों का निर्माण व विकास होता है। संचार के बिना मनुष्य के सामाजिक जीवन की कलपना नहीं की जा सकती है।''

मनुष्य में बाल्यावस्था से ही संचार प्रक्रिया का विकास शुरू हो जाता है। शिशु के संचार व्यवहार के विकास हेतु प्रेरणा एवं पर्यावरण आधारभूत तत्व है। मानव की जिज्ञासा का परिणाम है, कि आज का संसार हर समय संचार के माध्यम से कुछ न कुछ पाने के लिए लगा रहता है। आज जब संसार संचार के कारण सिमट कर नजदीक आ जाने की बात की जाती है, तो इसके पीछ संचार क्रान्ति की बड़ी भूमिका है। संचार को मानव जीवन का आवश्यक पहलू माना जाता है। एक ऐसा जीवन जिसके बिना मनुष्य के जीवन की कल्पना ही नहीं की जा सकती है। संचार माध्यम मनुष्य के सामाजिक प्राणी होने का सबसे बड़ा प्रमाण है। संचार के बिना मानव जीवन की सामाजिक जीवन की कल्पना नहीं की जा सकती है।

इस दौर में किसी भी परिवार की सबसे बड़ी चिन्ता अपने किशोरों को सही दिशा व सही शिक्षा दिलाने और फिर उन्हें अच्छे रोजगार में व्यवस्थित करने की होती है। एक ओर बहुस्तरीय, सामाजिक विषमता और दूसरी ओर शिक्षा तथा रोजगार के सम्बन्ध में साफ–सुथरी स्पष्ट सर्वव्यापी व समाजनीति होने के कारण रोजगार के क्षेत्र में लगभग अराजकता की स्थिति दिखायी देती है। हमारी सरकार जो अभी तक सभी किशोरों के लिये प्राथमिक शिक्षा तक सुनिश्चित नहीं कर पाई है। इससे भी गम्भीर बात यह है कि वर्तमान में जिन–जिन क्षेत्रों में, जिस–जिस प्रकार के रोजगार उपलब्ध है, उनकी जानकारी भी किसी सुनिश्चित प्रक्रिया के तहत जरूरतमंदों तक नहीं पहुँच पाती है। जबकि इस जानकारी का होना जितना युवाओं के लिए जरूरी है उतना ही शिक्षारत किशोरों के लिए भी।

संचार की परिभाषायें (Defenition of Communication) रू.

1. बुकर (Booker) के अनुसार, ''सम्प्रेषण ऐसा कोई भी व्यवहार है जिसमें किसी अर्थ का आगत–निर्गत किया जाता है, जिसमें एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति को सन्देश दिया जाता है।''
2. जिस्ट (Gist) के अनुसार, ''सम्प्रेषण ऐसा कोई भी व्यवहार है, जिसमें किसी अर्थ का आदान–प्रदान शामिल होता है तो वह सम्प्रेषण कहलाता है।''
3. वॉरेन वीवर (Warren Weaver) के अनुसार, ''संचार वह सभी प्रविधियाँ है जिसके द्वारा एक व्यक्ति के विचारों को प्रभावित करते हैं।''

संचार माध्यमः

आज मानव संचार का इतिहास अत्यन्त पुराना है, किन्तु संचार माध्यमों के इतिहास में बीसवीं शताब्दी में उल्लेखनीय प्रगति हुई है। सदियों तक विभिन्न लोक माध्यम जैसे – लोक गीत, लोक नाटक, लोक नृत्य, कठपुतली का खेल भांड, लावणी बाउल इत्यादि संचार माध्यम रहे हैं। लेकिन आज तकनीकि विकास के फलस्वरूप संचारक के पास अनेक माध्यम हैं, जैसे–रेडियो, टेलीविजन, समाचार–पत्र–पत्रिकाये, चित्रकला, फिल्म, पोस्टर, नाट्य मंच, पोस्टर बैनर इत्यादि। अपनी बात संचारित करने के लिये संचारक को इनमें से किसी माध्यम का चयन करना होता है।

इण्टरनेट माध्यमः

''संचार के माध्यम में इण्टरनेट अपनी एक अहम भूमिका अदा करता है।'' इण्टरनेट की स्थापना अमेरिका के रक्षा विज्ञान ने की थी। इसकी स्थापना का उद्देश्य रक्षा सम्बन्धी सूचनाओं को कम्प्यूटर के द्वारा एक जगह से हजारों मील दूर स्थापित किया है। इण्टरनेट को यदि आज के हिसाब से परिभाषित करें तो केवल यही कहा जा सकता है कि दुनिया भर में फैले लाखों कम्प्यूटर का नेटवर्क है। इससे सभी कम्प्यूटर एक दूसरे से जुड़े रहते हैं तथा आपस में किसी भी तरह की सूचनाओं का आदान–प्रदान आपस में कर लेते हैं। इसलिये कम्प्यूटर को सुपर हाइवे भी कहा जाता है। आज हम सूचनाओं के रूप में इस पर अखबार पढ़ सकते हैं, पत्रिकायें पढ़ सकते हैं, फिल्में देख सकते हैं, गाने सुन सकते हैं और गेम खेल सकते हैं।

कम्प्यूटर के बारे में यह तो ज्ञात ही होगा कि चाहे चित्र हो या आवाज कम्प्यूटर हमेशा एक फाइल में समझता व समझाता है। सूचना का यही फाइल रूप इण्टरनेट की जान है। आप किसी भी तरह की फाइल को सेकेण्डों में ट्रांसफर कर सकते हैं। इण्टरनेट के लिय किसी देश की कोई सीमा नहीं है। जिसके पास इण्टरनेट का कनेक्शन है वह बिना किसी बाधा के या दुनिया की परवाह किये बिना किसी को भी सूचना भेज सकता है। इण्टरनेट के लिये प्रयोग किये जाने वाले दूसरे सॉफ्टवेयर जैसे – गो–फर, वर्जीनिका या नेटस्केप, नेवीगेटर, विंडोज 98 से बहुत पिछड़ गये हैं।

सन्दर्भ

1. जॉयस शीला शॉ बाल विकास एवं बाल पब्लिश विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा–2
2. डॉ0 डी0 एन0 श्रीवास्तव, बाल मनोविज्ञान, 2009
3. डॉ0 प्रीती वर्मा बाल विकास
4. भाई योगेन्द्र जीत बाल मनोविज्ञान 2004/05 बाल विकास
5. डॉ0 शशि प्रभा जैन मानव विकास परिचय 2005
6. डॉ0 डी0 एन0 श्रीवास्तव अनुसंधान विधियाँ
7. राधेश्याम वर्मा जन संचार 1999
1. एस0 पी0 सुखिया, शैक्षिक अनुसंधान के मूल तत्त्व 1 दिसम्बर 1990
2. क्रो एण्ड क्रो चाइल्ड साइकलोजी बारनेस, नोबल, न्यूयॉर्क, 1958